

# तिरुपति भगवान वेंकटेश्वर की मूर्ति की कुछ अनोखी बातें

मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर, दाईं ओर एक एक छोटी रहती है जिसका इस्तेमाल वहां उपस्थिति वेंकटेश्वर स्वामी को हिट करने के लिए अंनंतालवर के द्वारा किया जाता था। जब इस छड़ का इस्तेमाल नन्हे बालक के रूप में वेंकटेश्वर को मारने के लिए किया गया था, तो उनकी ठोड़ी पर चोट लग गई थी। तब से वेंकटेश्वर को चंदन का लेप ठोड़ी पर लगाये जाने की शुरुआत की गई।

इस मंदिर में वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति पर लगे हुए बाल उनके असली बाल हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये बाल कभी उलझते नहीं हैं और हमेशा इतने ही मुलायम रहते हैं। इस मंदिर से 23 किमी दूर एक गांव स्थित है। इस गांव में सिर्फ वही लोग आ जा सकते हैं जो इस गांव के निवासी हों। इस गांव के लोग, सख्त नियमों के साथ अपना जीवन बिताते हैं। इसी गांव से भगवान वेंकटेश्वर के लिए, फूल, दूध, घी, मक्खन आदि सामग्री जाती है। वेंकटेश्वर स्वामी की स्थापना, गर्भ गुदी के मध्य में की गई है, ऐसा प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में, जब आप इसे बाहर से खड़े होकर देखें, तो पाएंगे कि यह मंदिर के दाईं ओर स्थित है। मूर्ति पर चढ़ाये जाने वाले सभी

फूलों और तुलसी पत्रों को भक्तों में बांटकर, परिसर के पीछे बने पुराने कुएं में फेंक दिया जाता है। स्वामी का पिछला हिस्सा सदैव नम रहता है। अगर आप ध्यान से कान लगाकर सुनें तो आपको सागर की आवाज सुनाई देती है। गुरुवार के दिन, मंदिर में निज रूप दर्शन का आयोजन किया जाता है, जिसमें सफेद चंदन के पेस्ट से स्वामी को रंग दिया जाता है। जब इस लेप को हटाया जाता है तो माता लक्ष्मी के चिन्ह बने रह जाते हैं। इन चिन्हों को मंदिर के अधिकारियों द्वारा बेच दिया जाता है। जिस प्रकार जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो पीछे मुड़कर नहीं देखा जाता है और न ही रोशनी की जाती है। उसी प्रकार, इस मंदिर के पुजारी, पूरे दिन मूर्ति के पुष्पों को पीछे फेंकते रहते हैं और उन्हें नहीं देखते हैं। मंदिर में चढ़ाये जाने वाले फूलों को दूर स्थित एक विशेष गांव से लाया जाता है।

इस मंदिर में एक दीया कई सालों से जल रहा है किसी को नहीं ज्ञात है कि इसे कब जलाया गया था। 1800 में, इस मंदिर को कुल 12 वर्षों के लिए बंद कर दिया गया था। उस दौरान, एक राजा ने 12 लोगों को दंडस्वरूप मोत की सजा दी और मंदिर की



दीवार पर लटका दिया। कहा जाता है कि उस समय विमान वेंकटेश्वर स्वामी प्रकट हुए थे।

बालाजी की मूर्ति पर पचाई कर्पूरम चढ़ाया जाता है जो कर्पूर से मिलकर बना होता है। अगर इसे किसी साधारण पत्थर पर चढ़ाया जाये, तो वह कुछ ही समय

में चटक जाये, लेकिन मूर्ति पर इसका प्रभाव नाण्य रहता है। मूर्ति का तापमान 110 फारेनहाइट रहता है, जबकि इसे प्रतिदिन सुबह 4:30 बजे ही जल, दूध से स्नान करा दिया जाता है। स्नान कराने के बाद मूर्ति से पसीना आता है जिसे पोंछा जाता है।

## जानिए, एक मोर का पंख हमारे जीवन कि दिशा बदलने में कितना सहायक है

देवताओं के सेनापति कहे जाने वाले शिव पुत्र कार्तिकेय मोर पर सवार होकर असुरों के साथ हुए युद्ध में विजय दिलवाए थे। क्या आप जानते हैं मोर के पंख हमारे लिए कितना उपयोगी है।

मोर के पंख का उपयोग। यही मोर का पंख हमारे ज्योतिष-शास्त्र एवं वास्तु शास्त्र के द्वारा मनुष्य जीवन में कितना भाग्यशाली सिद्ध होता है कि एक मोर का पंख हमारे जीवन कि दिशा बदलने में कितना सहायक है।

इसे नित्य प्रयोग में लाने से असंभव कार्य भी संभव से होने लगते हैं। निम्न प्रयोगों के द्वारा आप भी शुभ मोर के पंखों से लाभ उठा सकते हैं। घर के दक्षिण-पूर्व कोण में लगाने से बरकत बढ़ती है, व अचानक कष्ट नहीं आता है। यदि मोर का एक पंख किसी मंदिर में श्री राधा-कृष्ण कि मूर्ति के मुकुट में 40 दिन के लिए स्थापित कर प्रतिदिन मक्खन-मिश्री का भोग सांयकाल को लगाए, 41वें दिन उसी मोर के पंख को मंदिर से दक्षिणा-भोग दे कर घर लाकर अपने खजाने या लाकरस में स्थापित करें। तो ऐसा माना जाता है कि धन, सुख-शांति कि वृद्धि हो रही है। सभी रुके हुए कार्य पूरे होंगे।

काल-सर्प के दोष को भी दूर करने को इस मोर के पंख में अद्भुत क्षमता है। काल-सर्प वाले

व्यक्ति को अपने तकिये के खोल के अंदर 7 मोर के पंख सोमवार रात्री काल में डालें तथा प्रतिदिन इसी तकिये



का प्रयोग करे। और अपने बैड रूम की पश्चिम दीवार पर मोर के पंख का पंखा जिसमें कम से कम 11 मोर के पंख तो हों लगा देने से काल सर्प दोष के कारण आयी बाधा दूर होती है। बच्चा जिदी हो तो इसे छत के पंखे के पंखों पर लगा दे ताकि पंखा चलने पर मोर के पंखों की भी हवा बच्चे को लगे धीरे-धीरे हट व जिद कम होती जायेगी। जैसे कि पहलें वर्णन किया कि मोर व सर्प में शत्रुता है अर्थात सर्प, शनि तथा राहू के संयोग से बनता है। यदि मोर का पंख घर के पूर्वी और उत्तर-पश्चिम दीवार में या अपनी

जब व डायरी में रखा हो तो राहू का दोष कभी भी नहीं परेशान करता है। तथा घर में सर्प, मच्छर, बिच्छू

आदि विषेलें जंतुओं का भय नहीं रहता है। नवजात बालक के सिर की तरफदिन-रात एक मोर का पंख चांदी के ताबीज में डाल कर रखने से बालक डरता नहीं है तथा कोई भी नजर दोष और अला-बला से बचा रहता है।

यदि शत्रु अधिक तंग कर रहें हो तो मोर के पंख पर हनुमान जी के मस्तक के सिन्दूर से मंगलवार या शनिवार रात्री में उसका नाम लिख कर अपने घर के मंदिर में रात भर रखें प्रातःकाल उठकर बिना नहाये धोए चलते पानी में बहा देने से शत्रु, शत्रुता छोड़ कर मित्रता का व्यवहार करने लगता है।

## नटराज: कहानी नृत्य करते शिव की

हैं और उन्हें प्रणाम कर के ही अपना नृत्य शुरु करते हैं। यह नटराज भगवान दरअसल शिव जी का स्वरूप हैं। नटराज शिवजी का एक नाम है उस रूप में जिस में वह सबसे उत्तम नर्तक हैं। नटराज दो शब्दों से मिल कर बना है- नट अर्थात कला और राज का अर्थ है राजा। शिव का तांडव नृत्य प्रसिद्ध है। भगवान शिव को आमतौर पर विनश के साथ जोड़ा जाता है और हमेशा उन्हें गुस्से में ही दिखाया गया है। लेकिन बहुत ही कम लोग यह जानते हैं कि शिव जी को संगीत और नृत्य से कितना ज्यादा प्यार था। नटराज अवतार एक संदेश था कि अज्ञानता को केवल ज्ञान, संगीत और नृत्य ही

दूर कर सकता है। शिव के तांडव के दो स्वरूप हैं। पहला उनके क्रोध को दिखाता है और दूसरा आनंदप्रदान करने वाला तांडव। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार शिव के आनन्द तांडव से ही सृष्टि अस्तित्व में आती है तथा उनके रौद्र तांडव में सृष्टि का विलय हो जाता है। शिव कानटराज स्वरूप भी उनके अन्य स्वरूपों की ही भांति मनमोहक तथा उसकी अनेक व्याख्यायें हैं। आइये दर्शन करते हैं भारत के प्रसिद्ध शिव मंदिरों के नटराज शिव की प्रसिद्ध प्राचीन मुर्तियों के चार भुजाएँ हैं, उनके चारों ओर अग्नि के घेरें हैं। उन्होंने अपने एक पांव से एक बौने को दबा प्यार था। तथा दूसरे पांव से नृत्य मुद्रा में उभर की ओर उठते हैं। उन्होंने अपने पहले दाहिने हाथ में डमरू

## पूजा में तांबे के बर्तन का उपयोग क्यों किया जाता है

आप जब भी मंदिर जाते होंगे तो वहां पर मौजूद लोगों के हाथों में कभी चांदी, तांबा या स्टील के बर्तन जरूर देखते होंगे। हिन्दू धर्म में सोना



चांदी और तांबे के बर्तन काफी पवित्र माने गए हैं।

हिन्दू धर्म में ऐसा माना गया है कि ये धातुएं कभी अपवित्र नहीं होती हैं। पूजा में इन्हीं धातुओं के यंत्र भी उपयोग में लाए जाते हैं क्योंकि इन से यंत्र को सिद्ध प्राप्त होती है। वहीं दूसरी जगह अगर देखा जाए तो लोहा, स्टील और एल्यूमीनियम के धातु अपवित्र माने जाते हैं। अगर आप स्टील की प्लेट का इस्तेमाल पूजा के लिये करते हैं, तो इनका प्रयोग तुरंत ही बंद कर दें क्योंकि यह धातु पूरी तरह से अपवित्र माने जाते हैं और धार्मिक

क्रियाकलापों में इन धातुओं के बर्तनों के उपयोग की मनाही की गई है। इन धातुओं की मूर्तियां भी नहीं बनाई जाती। लोहे में हवा पानी से जंग लगता है। एल्यूमीनियम से भी कालिख निकलती है। इसलिए इन्हें अपवित्र कहा गया है। जंग आदि शरीर में जाने पर घातक बीमारियों को जन्म देते हैं। इसलिए लोहा, एल्यूमीनियम और स्टील को पूजा में निषेध माना गया है। पूजा में सोने, चांदी, पीतल, तांबे के बर्तनों का उपयोग करना चाहिए। हिन्दू धर्म में नारियल का महत्व अगर आपके लिये सोने और चांदी के बर्तन महंगे हैं, तो आप तांबा का प्रयोग कर सकते हैं। यह उनके तुलना में सस्ता है और मंगल कार्य

हेतु बहुत ही अच्छा धातु है। माना जाता है कि तांबे के बर्तन का पानी पीने से खून साफहोता है। इसलिए जब पूजा में आचमन किया जाता है तो आचमनी तांबे की ही रखी जानी चाहिए क्योंकि पूजा के पहले पवित्र क्रिया के अंतर्गत हम जब तीन बार आचमन करते हैं तो उस जल से कई तरह के रोग दूर होते हैं और रक्त प्रवाह बढ़ता है। इससे पूजा में मन लगता है और एकाग्रता बढ़ती है।



नटराज एक बहुत ही प्रसिद्ध नाचते हुए देवता की मूर्ती हैं। जिन्हें नृत्य का शौक होता है वे अपने सामने नटराज जी की मूर्ती रखते

## क्या कोई वस्तु शुभ या अशुभ होता है या ये अंधविश्वास है



परिणाम अच्छा नहीं है तो अशुभ होगा। चाकू को ही लीजिए। घर में रोजमर्रा के कामों में उसकी उपयोगिता व महत्व को नकारा नहीं जा सकता। एक सर्जन सर्जिकल नाइफ से ही ऑपरेशन कर मरीज की जान बचाता है। अतः एक डॉक्टर के हाथ का चाकू उपयोगी व अनिवार्य होने के कारण वह चाकू शुभ ही माना जाएगा, लेकिन यदि किसी चाकू का इस्तेमाल किसी व्यक्ति की हत्या करने जैसे कार्य के लिए किया जाता है, तो वह चाकू का दुरुपयोग है। अतः वह चाकू अशुभ माना जाना चाहिए। किसी चीज का सदुपयोग अथवा दुरुपयोग ही उसे शुभ या अशुभ बनाता है।

शुभ या अशुभ का आधार इस्तेमाल की जाने वाली चीज की उपयोगिता भी हो सकता है। जिस वस्तु का कोई उपयोग ही न हो वह कैसी शुभ या अशुभ हों, कुछ कलाकृतियां हो सकती हैं, जिनका वैसे तो कोई उपयोग नहीं होता, लेकिन कला की दृष्टि से वे मूल्यवान हो सकती हैं। लेकिन कोई भी कलाकृति सुंदर या आकर्षक

अथवा बहुमूल्य या अल्पमूल्य हो सकती है, शुभ या अशुभ नहीं। एक व्यक्ति बाजार में घूम-घूम कर एक मूर्ति बेच रहा था और कह रहा था कि यह मूर्ति स्वयं जमीन से प्रकट हुई है और बहुत शुभ है। जो भी इसे अपने घर में स्थापित करेगा, उसके घर में हर प्रकार की समृद्धि में वृद्धि होगी। एक व्यक्ति ने उस मूर्ति के दाम पूछे। बेचने वाले ने कहा, 'दस हजार रुपये।' पूछने वाले ने कहा, 'ऐसी मूर्तियां तो एक हजार रुपये में मिल जाती हैं, दस गुने दाम में क्यों दूँ जहां तक समृद्धि की बात है तो आप स्वयं क्यों नहीं इसे अपने घर में स्थापित कर लेते यहां सड़कों पर क्यों मारे-मारे फिर रहे हैं और लोगों को ठग रहे हैं। हमें शुभ-अशुभ के चक्र में मूख नहीं बनना चाहिए। अपनी व्यावहारिक बुद्धि का इस्तेमाल कर के चीजों की उपयोगिता पर भी विचार अवश्य कर लेना चाहिए।



## मां कात्यायनी के ध्यान मात्र से मिलता है अर्थ व मोक्ष का वरदान

नवरात्रि के छठें दिन मां कात्यायनी देवी को पूजा की जाती है। इनकी कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं। वे बैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट हुई थीं। भगवान कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए ब्रज की गोपियों ने इन्हीं की पूजा की थी। यह पूजा कालिंदी यमुना के तट पर की गई थी। अतः ये ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कात्य गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन ने भगवती पराम्बा की कठिन उपासना की थी। ऋषि की इच्छा थी कि उन्हें पुत्री प्राप्त हो। मां भगवती ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया। इसलिए देवी कात्यायनी कहलाई। मां के दायें तरफका ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रा में हैं तथा नीचे वाला हाथ वर मुद्रा में है। मां के बाईं तरफऊपर वाले हाथ में तलवार है और नीचे वाले हाथ में कमल है। मां का वाहन सिंह है। फल की प्राप्ति इनकी उपासना से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। लोगों का रोग, शोक, संताप और भय नष्ट हो जाता है। इस देवी की उपासना करने से परम पद की प्राप्ति होती है।

## बिना गुरु अवतार भी नहीं हुए पार

भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि ब्रह्मा और शंकर जैसा व्यक्ति भी गुरु के बिना संसार से पार नहीं उतर सकता है। गुरु की महत्ता को ही समर्पित दिन है गुरु पूर्णिमा। अपने गुरुओं के दर्शन कर जीवन को आलोकित करने का अवसर। इस वर्ष गुरु पूर्णिमा, 31 जुलाई के दिन है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है, 'गुरु बिनु भवनिधि तइ न कोई/ जो बिरिचि संकर सम होई।' भले ही कोई व्यक्ति ब्रह्मा और शंकर के समान क्यों न हो वह गुरु बिना भवसागर से पार नहीं उतर सकता है। गुरु को भारतीय संस्कृति में अहम पद प्रदान किया गया है और उन्हीं गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर लाती है गुरु पूर्णिमा। आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहा जाता है। यह दिन गुरुओं की महत्ता रेखांकित करता है। पूरे भारत में इस दिन लोग अपने-अपने गुरुओं के दर्शन कर जीवन को धन्य करते हैं, नई राह पाते हैं। कई श्रद्धालु इस दिन गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करते हैं। ब्रज में इस दिन को 'मुडिया पूनो' कहा जाता है। गुरु पूर्णिमा का यह दिन महाभारत को रचने वाले कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्म दिवस भी है। उन्होंने चारों वेद रचे। वेदों की रचना करने के कारण वे वेद व्यास कहलाए। वे वेदों की रचना कर आदि गुरु कहलाए और उनके प्रति आदर के कारण ही गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस तरह गुरु पूर्णिमा का

दिन जीवन को प्रकाश से आलोकित करने वाले गुरु के प्रति आधार की अभिव्यक्ति का दिन है। भारत भूमि पर जितने भी

हमारे यहां यह भी बताया गया है कि हमें हर किसी से सीखने का प्रयास करना चाहिए। यदि हमारे भीतर गुरु बनाने या सीखने का



अवतार अवतरित हुए उनके गुरु भी हुए हैं। श्रीराम के गुरु वशिष्ठ थे तो श्रीकृष्ण के सांदिपनी। तात्पर्य यही है गुरु होना जरूरी है। गुरु के बिना जीवन का उद्धार नहीं है। गुरु बनाने का एक दार्शनिक तात्पर्य

गुरुओं के भी गुरु कहलाए। गुरु पूर्णिमा बताती है कि हम जीवन में बड़ों और छोटों से भी सीखने का प्रयास करें। गुरु महिमा का बखान हनुमान चालीसा में भी प्राप्त होता है जहां कवि तुलसीदास जी ने लिखा है 'कृपा करौ गुरुदेव की नाई।' अर्थ यह है कि वे नाथ, मुझ गुरु समान कृपा कीजिए। हनुमानजी से यह प्रार्थना है कि वे गुरु भाव से हमें शरण में लें और हमारी चेतना को प्रखर बनाएं। दुविधा में गुरु का सहारा गुरु को भारतीय संस्कृति में ऐसे आश्रय के तौर पर देखा गया है जो विपरीत या कठिन परिस्थितियों में हमारा मार्गदर्शन करता है। कु रक्षेत्र में जब अर्जुन किंकरतव्यविमूढ हो गया तो श्रीकृष्ण ने गुरु रूप में उसका मार्गदर्शन किया। उसे जीवन के सार से अवगत कराया। अर्जुन गुरु द्रोण से शस्त्र विद्या में पारंगत हुआ था लेकिन जब जीवन समर में अपनों से युद्ध की दुविधा सामने आई तो अर्जुन ठिठक गया और तब गुरु रूपी श्रीकृष्ण ने उसकी शंकाओं का समाधान किया। हमें भी जीवन में जब कभी शंकाएं घेरती हैं तो हमें गुरु ही मार्ग दिखाते हैं इसलिए गुरु की महत्ता है। हमारी समस्याओं का समाधान गुरु के पास होता है। क्या करें गुरु पूर्णिमा पर जिन्हें अपने अपना गुरु माना है उनके दर्शन करें और आशीर्वाद प्राप्त करें। हिन्दू शास्त्रों में आदि शंकराचार्य को जातगुरु माना गया है तो उनकी पूजा इस दिन की जाना चाहिए।

## क्यों करें, अंतिम समय में दीप दान

मृत्यु जीवन का अंतिम कटु सत्य है। मृत्यु के लिए दो कार्य आवश्यक हैं। प्रथम, मनुष्य जब पांच तत्वों अर्थात जल, वायु, आकाश, पृथ्वी व अग्नि का कर्ज चुका दे तब मृत्यु को प्राप्त होगा। दूसरा, वह स्थान, वह विधि जब स्थूल शरीर को मिल जाए, जहां मृत्यु होनी है तब मृत्यु होगी। जहां अंतिम सांस ली वह उसका मृत्यु का स्थान था। जब हम मृत पड़ गए शरीर को अग्नि को समर्पित करते हैं तो वह पांचों तत्वों का कर्ज चुकाता है। इसलिए ही शव को जलाने का चलन है। चिता की अग्नि में देह भस्मसात् हो जाती है। दीपदान से जीवात्मा को मुक्ति मार्ग की उपलब्धि होती है। शास्त्र कहते हैं कि अंश अपनी अंश की पास पहुंचकर ही विश्राम लेता है। इसी प्रकार चैतन्य प्राण वायु के रूप में प्रवाहित अग्नि तत्व अपने उद्गम स्थल सूर्यपिंड में पहुंचकर ही विश्राम लेता है। दीपक मृतक आत्मा के पथ को प्रकाशित कर, उसे गंतव्य पर पहुंचने में सहयोग करता है। ज्योतिष की दृष्टि से कितने घंटे का एक प्रहर होता है। तीन घंटे अर्थात साढ़े सात घंटे का एक प्रहर होता है। चौबीस घंटे में कितने प्रहर होते हैं। आठ पहर होते हैं। आठों पहरों के नाम, दिन में-पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, रात्रि में-प्रदोष, निशीथ, त्रियामा, उषा। दीपदान से जीवात्मा को मुक्ति मार्ग की उपलब्धि होती है। दीपदान से जीवात्मा को मुक्ति मार्ग की उपलब्धि होती है।

पकड़ा है। डमरू की आवाज सृजन का प्रतीक है। ऊपर की ओर उठे हुए उनके दूसरे हाथ में आग है जो कि विनाश का प्रतीक है। उनका दूसरा दाहिना हाथ अभय (या आशिस) मुद्रा में उठा हुआ है जो कि हमें बुराईयों से रक्षा करता है। नटराज का जो पांव उठा हुआ है वह मोक्ष दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि शिव मोक्ष के मार्ग का सुझाव करते हैं। कहा जाता है कि शिव के चरणों में मोक्ष है। जो बौना शिव के पैरों तले दबा हुआ है वह अज्ञान का प्रतीक है। शिव जी अज्ञान का विनाश करते हैं।